बरगद ने कहा ज़रा देखो मेरी दुनिया

प्रथम संस्करण – वर्ष 2005

लेखक : **अनिल यादव**

प्रकाशक : **मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड**
तीसरी मंजिल, बीज भवन, मदर टेरेसा मार्ग,
अरेरा हिल्स, भोपाल – 462 011

इस पुस्तक की सामग्री का उपयोग करने के लिये किसी भी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। यदि स्त्रोत का उल्लेख करेंगे तो प्रसन्नता होगी।

छायाचित्र : अनिल यादव, राजेश राय, अनुज 'कन्नू'

मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड

भारत सरकार के जैव विविधता अधिनियम 2002 के तहत मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड का गठन निगमित निकाय के रूप में किया गया है। बोर्ड का सरोकार प्रदेश की प्रचुर जैव विविधता के संरक्षण, उसके संवहनीय उपयोग और उससे होने वाले लाभों के समुचित बंटवारे से है। संक्षेप में बोर्ड के प्रमुख कार्य इस प्रकार है :

- ❖ जैव विविधता के संरक्षण एवं उसके संवहनीय उपयोग से प्राप्त लाभों का स्थानीय समुदाय के बीच समुचित वितरण।
- ❖ भारतीय नागरिकों को जैविक सम्पदा के सर्वेक्षण, उसके वाणिज्यिक उपयोग के लिए आये अनुरोध को मंजूरी देना या उन्हें नियंत्रित करना।
- ❖ जैव विविधता के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन और शोध करवाना।
- ❖ शासकीय निकायों, स्वैच्छिक संस्थाओं, छात्रों, युवाओं तथा स्थानीय निकायों सहित सभी सम्बंधित पक्षों से जैवविविधता संरक्षण हेतु तालमेल रखना।
- ❖ जैव विविधता की जानकारी को संकलित करने के लिए लोक जैव विविधता पंजी तैयार करवाना, जिससे जैविक सम्पदा का उचित प्रबंध किया जा सके तथा गांव के विकास की योजना बनाने में महत्वपूर्ण योगदान मिल सके।
- ❖ स्थानीय निकाय के सदस्यों तथा स्वैच्छिक संस्थाओं के सदस्यों का प्रशिक्षण करना जिससे वे जैवविविधता संरक्षण तथा बोर्ड के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सार्थक भूमिका निभा सकें।
- ❖ जैव विविधता संरक्षण से जुड़े मसलों पर राज्य शासन को सलाह देना।
- ❖ जैव विविधता संरक्षण और उससे जुड़े मुद्दों पर चेतना जागृत करना और सम्बन्धित जानकारियों का प्रचार-प्रसार करना।

भूमिका

'वसुधैव कुटुम्बकम' की बात हमारी सामाजिक और राजनैतिक दुनिया में है या नहीं इस पर अलग अलग राय हो सकती हैं। परन्तु कुदरत में सभी जीवों (जीव जन्तु और वनस्पति) के लिए यह बात सोलह आने सच नजर आती है। एक जीव का स्वस्थ जीवन दूसरे जीव की ताकत है और एक जीव का कमजोर या नष्ट होना उससे जुड़े दूसरे जीवों को भी प्रभावित करता है।

बरगद के पेड़ को देख परख कर इस बात को अच्छी तरह समझा जा सकता है। बरगद को 'बरगद' बनने में कोई एक–दो–दस साल नहीं सैकड़ों साल लग जाते हैं तब जाकर बरगद अनगिनत तनों और शाखाओं वाला फैला–पसरा बरगद बनता है। लेकिन बरगद की यही विशेषता आज उसकी सबसे बड़ी दुश्मन बन चुकी है। बरगद के नए पौधे तो कम ही नजर आते है और जमीन की भूख के चलते इंसान की कुल्हाड़ी बूढ़े बरगदों का भी लिहाज नहीं कर रही। अब तो गांवों में इतनी सरकारी भूमि ही नहीं बची है जहॉ बरगद, 'बरगद' की तरह फैल पसरकर विशाल आकार ग्रहण कर सके। परन्तु, यह भी सच है कि जिस दिन बरगद के उपकार हमारी समझ में आ जायेंगे उसी दिन से बरगद को 'बरगद' ही नहीं पूरी कुदरत को संवारने और सहेजने के जतन भी करने लगेंगे।

बरगद और उसकी छत्र–छाया में पल रहे जीवों को जानने–समझने के लिए प्रकृति प्रेमी अनिल यादव और उनके सहयोगियों ने कई अवसरों पर बार–बार अनगिनत घंटे विशाल बरगद की छांव तले बिताए। उन्होंने जो देखा वह बरगद की ही जुबानी प्रस्तुत है। (मूलतः यह आलेख नई दुनिया इन्दौर और राज्य की नई दुनिया भोपाल के छब्बीस जुलाई 2004 के रविवारीय अंक में प्रकाशित हुआ था। जैवविविधता बोर्ड के अनुरोध पर श्री यादव ने पुनः इसे संवर्द्धित किया। आलेख में दिये गये छायाचित्रों के छायाकार श्री राजेश राय, अनिल यादव एवं अनुज 'कन्नू'हैं।)

बरगद ने कहा जरा देखो मेरी दुनिया

मैं एक बूढ़ा बरगद। पता नहीं कितने सौ सालों से यहां खड़ा हुआ हूँ। हर दिन मेरी दहलीज पर जाने कितने जाने–अनजाने अतिथि आते हैं, कुछ समय बिताते हैं और चले जाते हैं। आज मैंने अपने आंगन में तीन अतिथियों को देखा। वे औरों से कुछ हटकर थे। अन्य आगंतुकों की तरह वे मेरे विशाल आकार को देखकर जितने विस्मित नजर आ रहे थे उससे कहीं ज्यादा हैरत उन्हें उन सैकड़ों जीव–जन्तुओं को देखकर हो रही थीं जो मेरी गोद में किलोल कर रहे थे। मैं भी आगन्तुकों की गतिविधियां देखकर हैरान था।

अभी तक अतिथि आते थे, मेरे असंख्य तनों को देखते हुए मेरी छाया में कुछ समय बिताते थे, और वापस चले जाते थे। उनमें से कुछ मेरे प्रति कौतुहल भरी श्रद्धा व्यक्त करते थे और कुछ को मेरी बदहाली पर तरस आता था।

लेकिन, ये तीनों अतिथि कुछ विचित्र से थे। हालांकि उन्होंने भी पहले करीब एक घंटे तक मुझे चारों तरफ घूम फिर कर देखा। मेरे अनगिनत तनों में से कुछ को छुआ, हवा में झूल रही जटाओं की तरह मेरी जड़ों के गुच्छों को ताका–झांका और फिर कुछ विचित्र काम–काज में जुट गए। ऐसा तो मैंने कभी होते नहीं देखा था सो मैंने भी कौतुहल पूर्वक उनकी बातें सुनना और गतिविधियां देखना शुरू कर दिया।

पहले तीनों अतिथि उत्तर की ओर वहां बढ़े जहॉ मेरे तने भूमि पर ध्वस्त पड़े थे। दशकों पूर्व दोनों भूमि पर धराशायी हो गए थे। उनकी जड़ों में दीमक लग चुकी थीं फिर भी उन्होंने उसी हालत में अपनी एक नई और छोटी सी दुनिया बसा ली थीं। तनों से फूटी जड़ों ने उन तनों को नया जीवन दान

दिया था। विशाल टहनियों पर घूमने वाली अनगिनत मोरों में से एक नर मोर को वह दुनिया इतनी भाती थी कि दोपहर का समय वह वहीं गुजारती थी। दीमक की तलाश में वहीं मंडराने वाली कुछ गलगलें और दूसरे पक्षी उसके संगी–साथी बन गये थे।

मेरे अतिथि पता नहीं कब तक उस इठलाती मोर तथा उसकी सहेली सी लगने वाली चिड़ियों की गतिविधियों को देखते रहते लेकिन तभी लंगूरों का एक कुनबा वहां आ धमका और 'हूप–हूप' की आवाजों से मेरा पूरा आंगन गूंज उठा। वे शैतान बच्चों की तरह मेरे शरीर पर चढ़ गये। तीनों आगंतुक उनकी उछल–कूद देख रहे थे और अतिथियों की गतिविधियों को अनदेखा करते हुए लंगूरों का पूरा कुनबा अधिकार पूर्वक मेरे फल और पत्ते तोड़कर खा रहा था।

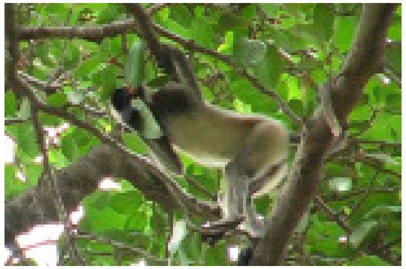

लंगूरों का यह परिवार, पूरी आजादी से मेरे आंगन में ही नहीं मेरे तनों और शाखाओं पर भी धमा– चौकड़ी मचाता घूम रहा था। वे तीनों अतिथि भी नीचे भूमि पर उनके पीछे उसी कौतुहल भरी बेचैनी से इधर उधर जा रहे थे। लंगूरों को अपने पीछे मंडराने वाले इन नवागंतुकों का व्यवहार समझ नहीं आ रहा था और वे कई बार तो घुड़कियां दे रहे थे। हर रोज की तरह लंगूरों की हरकतों से मेरा भरपूर मनोरंजन हो रहा था। घंटे भर बाद ही लंगूरों के इस कुनबे का पेट भर गया और वे उछल–कूद से थक गए। कुनबे के वरिष्ठ सदस्य ऊपर की टहनियों पर चिपके हुए हाथ–पांव नीचे लटकाए आराम की मुद्रा में आ गए। जबकि युवा लंगूर एक–दूसरे के शरीर को सहलाने और उनकी साफ–सफाई में जुट गए। लेकिन लंगूरों के बच्चों को भी इंसानों के बच्चों की तरह दोपहर के आराम से कोई मतलब नहीं था। उनकी धमा–चौकड़ी जारी रही। लड़ते–झगड़ते, जोर आजमाईश करते वे अपनी माताओं की तंद्राभंग

करते रहे और तभी माने जब उन्होंने मेरी एक कमजोर शाख को तोड़ डाला। लंगूरों की शैतानी से तंग आये मंदिर के पुजारी जोर से चिल्लाए, घबराकर लंगूर नीचे उतरे उन्होंने अपने बच्चों की करतूत देखी और शायद शर्मिन्दा से होते हुए 'हूप–हूप' करते पूर्व की ओर दौड़ गए।

मेरी ही तरह तीनों अतिथि भी लंगूरों को दौड़ लगाते देख रहे थे, फिर वे तीनों मंदिर के पुजारी के पास आ गए और बातें करने लगे। तब तक इन अतिथियों की गतिविधियों को लेकर मेरे मन में जिज्ञासा जाग उठी थी। मैंने उनकी बातचीत सुनने की कोशिश की, वे मंदिर के पुजारी से जानना चाहते थे मेरी छांव तले कौन–कौन से जीव–जंतु विचरते हैं। पुजारी ने उन्हें गींधराज, पैंगा, तोता, होला, मोर, कौआ, कोयल, धनेश, कठकोला, घुग्घु, पपीहा, नेवला, बिज्जु, सांप, बिच्छु, गोहरा, गिरगिट, बिसमरा, मकड़ी, दीमक, चींटी, चीपड़ी, की एक लंबी सूची सुना डाली। लेकिन पुजारी यह कहना नहीं भूले कि ये तो वे नाम हैं जो जाने–पहचाने हैं और उन्हें याद हैं। इसके अलावा मेरे आंगन में विचरने वाले हजारों सूक्ष्म कींट–पतंगों को उन्होंने देखा जरूर है लेकिन वे उनके नाम नहीं जानते हैं। पुजारी सच कह रहे थे मेरे आंगन में बिछे लाखों–करोड़ों पत्तों के नीचे कितने जीव–जंतु बसते हैं जब मुझे ही खुद याद नहीं है तो पुजारी को क्या याद होंगे? पुजारी से बात करने के बाद अतिथिगण मेरे आंगन में बने सैकड़ों छोटे–छोटे बिलों को देखने जा पहुंचे थे। वे शायद उन कीटों को देखना चाहते थे जिन्होंने भूमि से नरम मिट्टी निकालकर बाहर ढ़ेर लगा दी थीं। मेरा आंगन अभी कीटनाशक दवाओं से सुरक्षित था। इसलिए नन्हे कीटों और उनके बिलों की भी वहां कमी नहीं थीं। नम भूमि पर लगे नन्हीं–नन्हीं गोलियों की

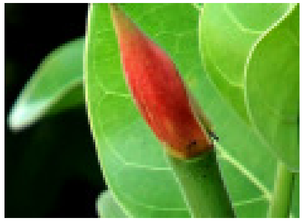

आकृतियों के बने मिट्टी के ढ़ेर बता रहे थे कि उन बिलों को केंचुओं ने बनाया था। सूखी भूमि पर ज्यादातर बिल उन चींटियों के थे जो नींचे गिरे मेरे फलों और फलों की ही तलाश में मारे गये दूसरे कीट–पतंगों के शवों के आहार पर पलती हैं।

मैं जानता था कि मेरे आंगन में पलने वाले नन्हें जीव रात या तड़के ही अपने बिल बनाते हैं, इसलिए अतिथियों को उनके बिल तो दिखेंगे लेकिन गर्मी बढ़ जाने से उनमें रहने वाली चींटियां और कीटों के दर्शन दुर्लभ हैं।

लेकिन अचानक ही बिलों को देखते हुए अतिथि ने बाकी के दोनों अतिथियों को आवाज देकर बुलाया। मैंने देखा कि एक स्थान पर तींनों ही गौर से भूमि पर कुछ देख रहे हैं। भूमि की एक दरार से चींटियों की कतार निकल रही थीं और दूसरी दरार में समा रही थीं। उनमें से हर चींटी के पास ले जाने लायक कुछ न कुछ सामान है। लेकिन तींनों अतिथियों का ध्यान उस मधुमक्खी पर केन्द्रित हो गया जो आज सबेरे मकरंद के लालच में डाल–डाल मंडरा रही थीं और अब मरी पड़ी थीं। आठ–दस चींटियां बड़े ही मनोयोग से जतनपूर्वक अपने से करीब बीस–पच्चीस गुना विशाल मधुमक्खी को उस दरार की ओर ले जा रही थीं जिसमें अन्य चींटियां समा रही थीं। मेरे लिए यह रोजमर्रा की उन सैकड़ों–हजारों घटनाओं में से एक थीं जो दिन भर घटती रहती हैं। लेकिन तींनों अतिथि उस घटना को इतने ध्यान पूर्वक देख रहे थे जैसे वह कोई अजूबा हो। थोड़ी ही देर बाद मुझे वे तींनों वहां से सूखे पत्तों की तरफ बढ़ते नजर आये जो समय–समय पर मेरी शाखों से बिछड़ते रहते हैं। भूमि पर उनकी कई इंच मोटी परत बिछी हुई थीं। बरसात में पत्तों से आहार पाकर भूमि पर नई उर्वर मिट्टी की एक परत बिछा देते हैं। बरसात में जब पानी बरसता है तो मेरे घने वितान के कारण एकदम भूमि की सतह तक नहीं पहुंच पाता। बारिश का पानी पत्तों से शाखाओं, फिर तने से बहता हुआ भूमि तक पहुंचता है जिससे मिट्टी का कटाव नहीं हो पाता। बरसते पानी की बड़ी मात्रा तो सड़े पत्तों से

बनी इस स्पंजी सतह में समा जाती है। लेकिन अभी तो अतिथियों को वहां शायद कोई गुबरीले का जोड़ा नजर आया था जो गोबर की गेंद बनाकर लुढ़काते हुए ले जा रहा था। देखते ही देखते इन गुबरीलों ने भूमि की नरम सतह में एक बिल खोदा और गोबर की गेंद के साथ दोनों उसमें समा गये। मैने बड़े अतिथि को सबसे छोटे अतिथि को समझाते सुना जो कह रहे थे कि मादा गुबरीला उसी नर गुबरीले से ब्याह रचाती है जिसके पास पौष्टिक तत्वों से भरपूर गोबर की गेंद होती है। ब्याह के बाद गोबर की इसी गेंद में गुबरीले के बच्चे आहार और परवरिश पाते हैं।

इन अतिथियों ने नीचे पड़े पत्तों को उल्टा–पलटा तो उन्हें वहां कुछ बेहद लाल सुर्ख बीटल तथा अनगिनत अन्य नन्हे जीव दौड़ते–भागते नजर आए, ये वे जीव थे जो मेरे सड़ते हुए पत्तों की खुराक से जीवन पाते थे। कुछ पक्षियों के लिए वे जायकेदार, पौष्टिक व्यंजन की तरह थे। जिनका रसास्वादन करने के लिए वे इन जीवों की तलाश में दिन भर मेरे सूखे पत्तों को उलटते पलटते रहते थे।कुछ ही कदम आगे बढ़ने पर तीनों आगंतुकों को सूखे पत्तों पर चलते फिरते वे लाल–कत्थई कीट दिखे जो अपनी लंबी सुन्डियों से मेरे फलों का रस ऐसे पीते हैं जैसे बच्चे स्ट्रा पाईप से जूस या कोल्ड ड्रिंक पीते हैं।

जून माह का अंतिम सप्ताह था। कुछ ही दिन पूर्व मानसून की पहली बौछार भी पड़ चुकी थी लेकिन आज आसमान पर एक भी बादल नजर नहीं आ रहा था। धूप बहुत ही तेज थी थकान से चूर तीनों अतिथि खा–पीकर नीचे एक तरफ चबूतरे पर अलसाये से लेट गये थे। गर्मी और उमस की वजह से मेरा बदन भी अलसाने लगा था। मैं भी इस दुपहरिया में एक झपकी ले लेना चाहता था। हवा थम सी गई थी और मैंने भी अपने पत्तों को हिलाना–डुलाना बंद कर दिया । अभी कुछ ही पल बीते थे कि अचानक मेरा आंगन

कांव–कांव से गूंज उठा। मैंने देखा दो कौए थे जो आकर मेरी शाखाओं पर बैठ गये थे। कहते हैं कि इंसानों से ज्यादा भाईचारा कौओं में होता है। भोजन नजर आने पर वे अकेले कभी नहीं खाते अपने अन्य भाई–बंदों को भी कांव–कांव करके बुला लेते हैं। मेरी शाखाओं पर अनार की तरह लाल–सुर्ख फल देखकर उन्होंने अपने भाई–बांधवों को टेरना आरंभ कर दिया था। थोड़ी ही देर में वहां आठ–दस कौए जमा हो गये और सब इस डाल से उस डाल पर फुदकते हुए मेरे फलों को खाने लगे। अतिथियों ने भी अपना आलस छोड़ा और कौओं की गतिविधियों का निरीक्षण करना आरंभ कर दिया।

तीनों अतिथियों को मैं बताना चाहता था कि गर्मियां बीत चुकी हैं, अषाढ़ लग गया है। बरगदों में फल गर्मियों में तब आते हैं जब जंगल में जीव–जंतुओं, कीट पतोंगों के लिए आहार की कमी हो जाती है। यही वजह है कि पूरी गर्मियों भर हजारों पक्षी तड़के चार बजे से मेरी शाखाओं पर डेरा जमा लेते हैं। सबेरे चार–बजे से छह बजे तक का समय भारतीय पक्षियों का कलरव सुनने का आदर्श समय होता है। अषाढ़ में जब बरसात शुरू होने लगती है तब तक अनगिनत जीव–जंतु मेरे सहारे कठिन गर्मियां बिता चुकते हैं। वर्षा ऋतु में उनके सामने खाद्य पदार्थों की कमी नहीं होती तब तक फलों से भरी मेरी झोली भी रीत जाती है। लेकिन अतिथियों की आपस की बातें सुनकर मुझे पता चला कि वे सब ये बातें भली भांति जानते हैं।

अब अषाढ़ लग चुका है मेरी गिनी–चुनी टहनियों पर कुछ ही फल शेष हैं। लेकिन इस वर्ष अभी तक ढंग से बरसात आरंभ नहीं हुई है। इसलिए दूर–दूर से पक्षी अभी भी फलों की आस में मेरे पास चले आते हैं। ये कौए भी शायद कहीं दूर से आये थे।

इनके साथ पहाड़ी कहे जाने वाले दो बिल्कुल काले कौए भी थे। उनकी गरदनों पर स्थानीय कौओं की तरह हल्के स्लेटी घेरे नहीं थे। थोड़ी ही देर में इन कौओं का पेट भर गया और वे शैतानी पर उतर आये। उनहोने

मेरी शाख पर पहले से आराम कर रहीं एक कोयल को वहां से खदेड़ दिया। ऊपर जब कौए शैतानीं में मगन थे तो नींचे अतिथि उनकीं शरारतों को गौर से देख रहे थे। मैने बड़े अतिथि को अपने साथियों से कहते सुना कि भले हीं कौओं ने अपनीं संख्या के आधार पर कोयल को खदेड़ दिया हो लेकिन कोयल बहुत हीं चालाक होतीं है और अक्सर अपने अंडे मौका देखकर कौए के घोंसले में देतीं है। बेचारे कौए जिन्हें अपना चूज़ा मानकर मेहनत से पालते–पोसते हैं कई बार वह अपनीं शाखों पर बने कौओं के घोंसलों मे ये अजूबा घटिंत होते कई बार देखा है।

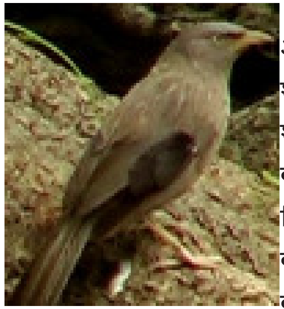

अब तींनों आगंतुकों का ध्यान उस अंजान चितकबरी बड़ी चिड़िया की ओर गया जो तेज धूप से बचने मेरीं शाख पर आ बैठी थीं। उसका नाम न वे जानते थे और न मुझकों पता था। मैं तो बस उसे अक्सर अपनीं शाखाओं पर आराम फरमाते देखा करता था। उसे देखते हुए अतिथियों को अचानक 'फुलचुहीं' कहीं जाने वालीं दो–तींन इंच कीं नन्हीं से घुमावदार–लंबी चोंच वालीं चिड़िया नजर आई और वे तींनों उसके पींछे चल दिए। फुलचुहीं उस समय शायद अपना जायका बदलना चाहतीं थीं और इधर–उधर उछलतीं हुई मेरे शरींर कीं सूखीं छाल के नींचे बसने वाले कींटों को ढूंढ–ढूंढ कर खा रहीं थीं। तभीं वहां सुर्ख लाल सिंर और काले बैंगनीं रंग का 'कठफोड़वे' का जोड़ा आ गया। ये पक्षीं उसकीं सुंदरता कीं वजह से जिंतना मुझे पसंद है उससे कहीं ज्यादा मुझे उसका काम भाता है। वह जब तक मेरीं शाखाओं पर रहता है एक जगह स्थिर नहीं रहता। इधर–उधर फुदकता हुआ मेरे शरींर से ढूंढ कर उन नन्हें–नन्हें कींटों को खाता रहता है जो मेरे वृद्ध और कृशकाय शरींर को और भीं कमजोर बनाते रहते हैं। मुझे उन कींटों द्वारा मेरे शरींर के रूग्ण हिंस्से को खाने पर आपत्ति नहीं हैं यह उनका भोजन है। लेकिंन यदिं कठफोड़वे जैसे पक्षीं उन्हें निंयंत्रित न करें तो वे मेरे शरींर से भोजन प्राप्त कर अपना वंश इतना बढ़ा लें कि मेरीं तो असमय हीं मृत्यु हो जाये ये कींट किंसानों कीं फसलों को भीं परेशानीं खड़ीं कर दें।

सूरज पश्चिम की ओर बढ़ चला था अचानक बादल घुमड़ने लगे और इस छोर से उस छोर तक करीब पंद्रह बीघा का मेरा पूरा आंगन मोरों की 'क्यांव–क्यांव' से गूंज उठा। ठंडी बयार चलते ही नर मोर अपने खूबसूरत पंख फैलाकर बेढ़ब सी नजर आने वाली पंखहीन मादा मोरों के आसपास थिरकने लगे। मादा मोरों ने भी नाचकर उनका साथ दिया लेकिन उनकी खुशी कुछ ही देर की रही और बादल गिनी चुनी बूंदे बरसाकर आगे बढ़ गए। मोर एक बार फिर अपनी प्रणय लीला छोड़ मेरी छाया तले फैले सूखे पत्तों से कीट पतंगों को चुनने में जुट गए। ऊपर हरियल तोतों की 'टे–टें' बढ़ गई थी। वे मेरी पुरानी शाखों के टूटने से निर्मित कोटरों में बने अपने घोंसलों की ओर लौट आये थे। ऊपर सैकड़ों तोतों का शोर सुन नीचे अज्ञात की तलाश में घूम रहे तीनों अतिथि टकटकी लगाए ऊपर ताकने लगे थे। मैंने अपने कोटरों में रखे हरियलों के अंडों में से निकले चूजों को वयस्क तोते बनने की पूरी प्रकिया जीवन में अनगिनत बार देखी है। समय गुजरने के साथ ही उनका रंग हरे से गहरा हरा बिल्कुल मेरे पत्तों की तरह हो जाता है। यही वजह है कि मेरे अतिथियों हरियल नजर नहीं आ रहे थे वैसे भी यदि तोते बिना हिले–डुले मेरी शाख पर बैठे हों तो दस–बीस फीट दूर से उन्हें देख पाना मुश्किल है। फिर मेरे अतिथि तो भूमि पर करीब सौ–डेढ़ सौ फीट नीचे खड़े थे। अतिथिगण आंखें फाड़े–फाड़े परेशान हो गये लेकिन उन्हें तोते नजर नहीं आये और सिर्फ उनकी 'टें–टें' से ही उन्हें संतोष करना पड़ा।

अचानक ही मैंने छोटे अतिथि का चेहरा खुशी से दमकता देखा उसने अन्य दोनों अतिथियों को भी वहीं बुला लिया। वे एक कोटर के अंदर झांक कर एक मकड़ी को दो नन्हीं मकड़ियों के साथ रात का भोजन पकाने के लिए जाला बुनते देख रहे थे। वहीं पास ही एक 'गिजाई' (बरसाती कीड़ा) दीन–दुनिया से बेखबर सूखे पत्तों के नीचे शरण की तलाश कर रही थी।

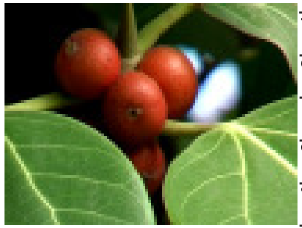

सूरज कुछ और अस्ताचल की ओर सरक गया। उसकी किरणें अब पश्चिम की ओर से झुरमुट के अंदर आने लगी थीं। अतिथि गणों की ताक–झांक अभी समाप्त नहीं हुई थीं। मैंने एक अतिथि को दूसरे अतिथि के लिए पुकारते सुना और जिज्ञासापूर्वक देखा तो पाया कि वे फलों के एक गुच्छे पर लाल बर्र, चींटे और सुंडी वाले लाल कीट को झगड़ते देख रहे थे। मेरे लिए यह मामूली सी घटना थी और उन तीनों के लिए एक रोचक नजारा। हांलांकि शाखा पर अभी हजारों फल और भी लगे थे लेकिन तीनों ही कीट उसी गुच्छे पर अपना कब्जा करने के लिए अन्य कीटों को खदेड़ने की कोशिशें में जुटे हुए थे। पास ही दो बड़ी हरी मक्खियां (फ्रूट–फ्लाई) एक फल के पास हरे पत्ते पर बैठी प्रेमालाप कर रही थीं। मैंने एक अतिथि को कहते सुना कि इस प्रणय लीला के पूरा होने के बाद मादा मक्खी किसी सड़ते हुए फल को प्रसूति गृह मान उसमें अंडे देगी। अंडों में से नन्हें–नन्हें लार्वा निकलेंगे और फिर विभिन्न चरणों में अपना रूप बदलते हुए एक दिन हरी मक्खी बनकर फुर्र हो जायेंगे। मैं यह घटना हर साल हजारों–लाखों बार देखता रहा हूं।

अचानक ही वहां एक रोचक क्रम घटा मेरी ही किसी पुरानी शाख के कोटर में बसेरा करने वाला एक जंगली चूहा शाखाओं पर से भागते–कूदते नीचे कपूरना नदी में जा गिरा। नदी में पहले से ही छह सात फीट लंगा सांप किसी मेंढक को अपना शिकार बनाने की तलाश में था। पलक झपकते ही सांप ने पैंतरा बदला और देखते ही देखते चूहे को मुंह में दबा लिया। पानी में जोर–जोर से 'छप–छप' की आवाज सुनकर तीनों अतिथि उधर पलटे तब तक चूहे को मुंह में दबोचे सांप ने चूहे को निगलना शुरू किया। थोड़ी ही देर में चूहा अपने पिछले पैर फड़फड़ाता हुआ सांप के उदर में समा गया। घटनाक्रम इतना रोमांचक था कि मेरे छोटे अतिथि ने तो पल भर के लिए भी पलकें नहीं झपकाई। प्रकृति का यही नियम है कि 'जीवो जीवस्य भोजनम्' जीव ही जीव का भोजन है। काई जीवित रहे इसलिए किसी अन्य को मरना पड़ता है। लेकिन सांप को चूहे का

शिकार मिल जाने से उस मेंढ़क की जान बच गई जो चालीस–पचास फीट दूर ही उछल–कूद करते हुए कीटों को उदरस्थ कर रहा था।

तीनों अतिथियों को तो यही घटना भारी रोमांचक लग रही थी उन्हें क्या पता कि रात के अंधेरे में इससे भी खौफनाक घटनाऐं तब घटती हैं जब अपने आहार की तलाश में ''घुग्घु' (उल्लू) मेरी शाखाओं पर घात लगाए बैठता है। काश ये अतिथि मेरी शाखाओं के गहरे कोटरों में अंदर झांककर देख पाते तो इन्हें पता चलता कि उनमें सिर्फ मासूम नजर आने वाली शरारती गिलहरियां ही नहीं रहती उनमें कितने ही बिज्जू, नेवले, गिरगिट, बिसमरे (जंगली छिपकली), गोहरे जैसे शिकारी जीव भी अपना कुनबा बसाये बैठे हुए हैं।

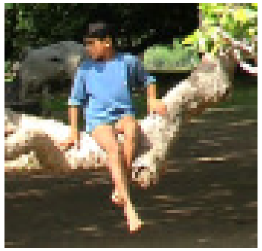

शाम कुछ और गहरा गई थी तीनों अतिथि मेरी हवा में झूलती जड़ों को छूकर देख रहे थे जो दशकों पहले एक बरसात में मेरी शाख से फूटी थी और अब लटकते हुए बस जमीन को छूने ही वाली थी। ऐसी जड़ें ही आगे चलकर एक पृथक तने का रूप ले लेती हैं और मेरी विशाल शाखाओं को उनसे सहारा मिल जाता है। ये नए तने सिर्फ शाखाओं को सहारा ही नहीं देते मूल वृक्ष को भूमि से भोजन भी पहुंचाते हैं। उनके सबसे निचले सिरों पर फूट रही पीली जड़ों को प्यार से सहलाते हुए धीमे–धीमे बातें कर रहे थे। मैंने सुना, उनमें से एक कह रहा था कि बरगद का वृक्ष हमारे संयुक्त परिवारों की तरह हैं और उसका हरएक तना परिवार के नए सदस्य की तरह मूल वृक्ष को सहारा देते हुए उसकी छत्र छाया में विस्तार पाता है।

मेरे अतिथियों ने सबेरे अपने काम की शुरूआत मेरे ध्वस्त तनों में लगी दीमक पर अफसोस जताते हुए की थी। शाम को जब वे मेरी हवा में लटकती जड़ो को देख रहे थे तो मैंने उन्हें यह कहते हुए अपने काम का समापन करते सुना कि बरगद को किसी के सहारे की जरूरत नहीं है, इंसान की कुल्हाड़ी से यदि बरगद

बच पाए तो सचमुच बरगद 'अक्षय वट' है। प्रकृति ने उसे खुद को पुर्नजीवन देने की अद्भुत क्षमता दी है। जिसके सहारे वह नित अपना कायाकल्प करता हुआ उन हजारों–लाखों कीट–पतंगों और जंतुओं के लिए आश्रय और भोजन देता है जिनका अस्तित्व अंततः मनुष्य के अस्तित्व के लिए अत्यावश्यक है।